सालासर में बाबा का जो दरबार न होता

सालासर में बाबा का जो दरबार न होता,
हम भक्तो का फिर बेडा कभी भी पार न होता,

सालासर में भक्तो की आशाये कौन पुगाता मेहंदीपुर में कष्टों का फिर साया कौन भगाता,
दुःख ही दुःख होता सुख का कोई आधार न होता,
हम भक्तो का फिर बेडा कभी भी पार न होता,

मितली ना कोई मंजिल सब रहते बीच डगर में तूफानों में कोई नइया फस्ती है जैसे भवर में,
वो नइयाँ दुबे जिसका खेवन हार न होता,
हम भक्तो का फिर बेडा कभी भी पार न होता,

सब करते रहते निंदा आपस में इक दूजे की और कोई कभी न कहता के भाई जय बाबा की,
सोनी आपस में किसी का कभी प्यार न होता,
हम भक्तो का फिर बेडा कभी भी पार न होता,

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/7203/title/salasar-me-baba-ka-jo-darbar-na-hota-hum-bhakto-ka-phir-beda-kabhi-bhi-paar-na-hota-

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |